चित्रः शुद्धसत्व बसु

ट्रेन और पुलिया वाली प्रार्थना

(कवर का शेष भाग)

“धत्त तेरी की...। कोई बात नहीं। गाड़ियाँ तो यहाँ आती ही रहती हैं।” यह सोचते हुए वो वापस पेड़ की ओर दौड़ पड़ी। तब तक इच्छू पेड़ पर चढ़ अपनी दोनों जेबें कैरियों से भर चुका था। बिनिया भी उसी डँगाल पर जा बैठी जिस पर इच्छू पाँव लटकाए बैठा था। बिनिया ने अपनी जेब से नमक की पुड़िया निकाली और दोनों कैरियाँ खाने लगे।

“इच्छू, तेरे पापा ने कल कुछ कहा?”

“कुछ नहीं। कह रहे थे जाना तो होगा ही।” इच्छू ने एक कैरी को अपनी निकर पर रगड़ते हुए कहा।

बिनिया के कैरी खाते हाथ रुक गए। “पर, तेरी मम्मी तो कह रही थी कि बड़े साहब ने कहा है कि वो कुछ करेंगे।”

“पर पापा कहते हैं कि कुछ नहीं हो सकता। जाना ही होगा।” इच्छू कैरी के छिलके दाँत से काट-काटकर फेंक रहा था।

बिनिया को अच्छा नहीं लगा। कुछ भी। न कैरी। न इच्छू का छिलके काट-काटकर फेंकना। न दूसरी डँगाल पर बैठी बीज कुतरती गिलहरी।

“बिनिया देख, गाड़ी।” अचानक इच्छू चिल्लाया। बिनिया झट से घूमी। प्रभुदयाल अपनी भैसों को पास के नाले में नहलाने ले जा रहा था।

“कहाँ है गाड़ी?” बिनिया रुआँसी आवाज़ में बोली।

“अरे वो गाड़ियाँ ही तो हैं प्रभुदयाल की। इन्हीं से तो उसका घर चलता है।” इच्छू हो-होकर हँसने लगा।

“मुझसे ऐसा मज़ाक न किया कर इच्छू।” बिनिया नाराज़ होकर डँगाल से कूद गई।

“सुन, भैंस पर चली जाना। तेरी भी गाड़ी बन जाएगी वो।” इच्छू हँसे जा रहा था। बिनिया की ज़ोर की रुलाई फूट पड़ी। वो घर की ओर चल दी। अचानक कू...कू की आवाज़ उसके कानों में पड़ी। उसने मुड़कर देखा गाड़ी आ रही थी। वो घर छोड़ पुलिया की तरफ भागने लगी। दौड़ते-दौड़ते ऊपर देखा। हाँ, सवारी गाड़ी ही है। वो और तेज़ दौड़ने लगी।

बिनिया पुलिया के नीचे हाँफती खड़ी थी। आँखें मींचे। कुछ बुदबुदाती। ऊपर से गाड़ी गुज़र रही थी। पूरी गाड़ी गुज़र जाने के बाद उसने धीरे-धीरे आँखें खोलीं। इच्छू को देखा। पास नहाती भैंसों को देखा और ज़ोर-से हँस पड़ी। अभी वो इच्छू के पास पहुँची ही थी कि वो पेड़ से कूद गया। और अपने कपड़े झाड़ने लगा। फिर दोनों घर की ओर चल दिए।

“पता है बिनिया, पापा बता रहे थे कि दिल्ली में बहुत बड़े-बड़े स्कूल हैं। एक स्कूल में मेरे दाखिले की बात हो भी गई है। वहाँ सब बच्चे बड़ी-बड़ी बसों में आते हैं स्कूल। यहाँ जैसा नहीं कि स्कूल की घंटी कान में सुनाई पड़ने के बाद घर से निकले फिर भी सबसे पहले पहुँच गए।” इच्छू बोला।

“ऊँह! बड़ा आया बस में बैठ स्कूल जाने वाला।” फिर उसकी टाँगों पर धौल जमाते हुए बोली, “तुझे तो इसी 11 नम्बर की बस से स्कूल जाना होगा। समझे।” तब तक घर आ चुका था। दोनों अपने-अपने घर चले गए।

जब से इच्छू के पापा की बदली की खबर सुनी थी तब से बिनिया को कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। वो कर कुछ भी रही होती, पर सोचती सिर्फ एक चीज़ थी। माँ ने खाने की थाली उसके आगे रख दी। बिनिया ने हाथ धोए और अनमनी-सी चुपचाप खाने लगी। “क्या हुआ बिनिया इत्ती उदास क्यों हैं?” अम्मा ने प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा। बिनिया कुछ न बोली। अम्मा जानती थी कि बिनिया के लिए इच्छू से बिछुड़ना बहुत मुश्किल होगा। बचपन से दोनों साथ-साथ पले-बढ़े हैं।

वह उसे समझाते हुए बोलीं, “कोई कर भी क्या सकता है? सरकारी नौकरी है। जाना तो होगा ही।”

“कोई नहीं अम्मा। बदली रुक भी जाती है।” अचानक बिनिया ज़ोर से बोली। “और अब तो रुक ही जाएगी।”

“अच्छा! कैसे?” अम्मा ने पूछा।

“क्योंकि मैंने पुलिया के नीचे खड़े होकर कहा है कि बदली रुक जाए। तब पुलिया के ऊपर से सवारी गाड़ी जा रही थी। तुम्हें मालूम है अम्मा, जब मालगाड़ी जाती है तो बात पूरी नहीं होती है। सवारी गाड़ी से पूरी होती है। याद है न, उस बार कैसे हमारी गौरैया ठीक हो गई थी!”

अम्मा कुछ नहीं बोली। बस उसे देखती रही।

अगली सुबह इच्छू की माँ ने बताया कि कल ही जाना होगा। शाम की गाड़ी है। बड़े सारे काम करने हैं। सामान बाँधना है। सीट बुक करानी है। स्कूल से सर्टिफिकेट लेना है।

बिनिया ने भी सुना।

दोपहर को इच्छू के साथ पेड़ पर बैठी तो इच्छू बोला, “मैं तुझे चिट्ठी लिखूँगा। तू जवाब ज़रूर देना। और हाँ, तू मुझसे मिलने तो आएगी न?” बिनिया चुप बैठी रही।

शाम को इच्छू के जाने का समय हो गया था। बिनिया का अता-पता नहीं था। इच्छू ने सोचा, “शायद वह स्टेशन आएगी।”

स्टेशन बहुत छोटा था। वहाँ आठ-दस लोग ही खड़े थे। इच्छू ने चारों तरफ देखा। इतने में गाड़ी आती दिखाई दी। इच्छू ने एक बार फिर सब तरफ देखा।

गाड़ी ने ज़ोर की सीटी मारी। सब लोग जाने वालों को हाथ हिलाकर विदा कर रहे थे। बिनिया के दादू कह रहे थे, “सुन, इच्छू शहर बहुत बड़ा है। वहाँ साइकिल ज़रा धीमे चलाना।”

गाड़ी धीमे-धीमे सरकने लगी थी।

गाड़ी अब उसी पुलिया से गुज़रने वाली थी। वे दोनों अकसर उसे वहाँ से गुज़रते देखते थे। तब वे पुलिया के नीचे खड़े रहते थे और गाड़ी ऊपर से गुज़र जाती थी। आज इच्छू गाड़ी में होगा और पुलिया नीचे से गुज़र जाएगी। पुलिया और आम के पेड़ को देखने के लिए वह गाड़ी के दरवाज़े पे आकर खड़ा हो गया था। पुलिया पास आती जा रही थी। पुलिया के ठीक नीचे बिनिया अकेली खड़ी थी। आँख बन्द किए। कुछ बुदबुदाती। इच्छू ने पहले तो सोचा कि उसे ज़ोर से आवाज़ दे... फिर कुछ सोच कर चुपचाप पुलिया के नीचे खड़ी बिनिया को देखता रहा।

पुलिया गाड़ी से दूर होती चली जा रही थी।

– शशि सबलोक